Sampreshan
UGC CARE GROUP 1
https://sampreshan.info/
ISSN: 2347-2979
Vol. 17, Issue No. 1, March 2024

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली : नालंदा महाविहार के विशेष संदर्भ में

प्रो. मनोज कुमार सक्सेना
अधिष्ठाता एवं अध्यक्ष
शिक्षा स्कूल
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
ईमेल – **drmanojksaxena@gmail.com**
आशीष कुमार
वरिष्ठ शोध अध्येता
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
ईमेल – **ashish013030@gmail.com**

सारांश

शिक्षण–अधिगम व्यवस्था का औपचारिक प्रतीक हमारी प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली है। क्योंकि इस प्रणाली में विद्यार्थियों के प्रवेश से लेकर दीक्षांत तक की पूरी व्यवस्था का प्रबंध शिक्षक ही करते थे। यह प्रणाली लिखित रूप में नहीं थी लेकिन इस व्यवस्था का अनुकरण निरंतर किया गया। वहीं जब हम वर्तमान शिक्षा व्यवस्था का अवलोकन करते हैं तो पाते हैं कि इस व्यवस्था का एक लिखित प्रारूप है और इस प्रारूप के तहत शिक्षण–अधिगम की प्रक्रिया चलती है। जब एक शिक्षक, समाज और उसके हितधारकों के परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करता है तो वह समाज में अपना एक आदर्श स्वरूप को स्थापित कर रहा होता है। इस तरह शिक्षकों से यह आशा की जाती है कि वह विषय–विशेषज्ञ हो, ईमानदार हो, लोकतान्त्रिक वातावरण उपलब्ध कराने वाला हो, विद्यार्थियों को सदैव सहायता करने के लिए उपलब्ध हो, विद्यार्थियों को समय–समय पर अभिप्रेरित करने वाला हो और विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को भलीभाँति समझने वाला हो। इन गुणों से परिपूर्ण शिक्षक को एक आदर्श शिक्षक माना जाता है। शिक्षक का यह आदर्श रूप तभी प्रासंगिक है जब विद्यार्थी अधिगम के प्रति जिज्ञासु हो। शिक्षण की पूरी प्रक्रिया में विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी का होना आवश्यक है। साथ ही शिक्षण–अधिगम व्यवस्था तभी पूर्ण मानी जाती है जब इसमें शिक्षक व शिक्षार्थी दोनों की सहभागिता हो। इस तरह हम देखते हैं कि शिक्षण–अधिगम की प्रक्रिया में शिक्षकों की भूमिका का विशेष महत्व है। अतः इस शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य प्राचीन भारतीय शिक्षा के प्रमुख केंद्र के रूप में नालंदा महाविहार की पृष्ठभूमि को समझना एवं नालंदा महाविहार के शिक्षकों की विशेषताओं का अध्ययन करना है।

Sampreshan
UGC CARE GROUP 1
https://sampreshan.info/
ISSN: 2347-2979
Vol. 17, Issue No. 1, March 2024

संकेत शब्द : प्राचीन भारतीय शिक्षा, नालंदा महाविहार, शिक्षक

प्रस्तावना

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में प्रमुख उच्च शिक्षा के केंद्र के रूप में नालंदा महाविहार का नाम प्रसिद्ध है। प्राचीनकाल में भारत को बौद्धिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जो गौरव प्राप्त था उसका श्रेय प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली के नालंदा महाविहार की शैक्षिक पद्धति को ही जाता है। शिक्षा पद्धति में शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक को राष्ट्र निर्माता माना जाता है क्योंकि शिक्षक विद्यार्थियों का ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र का भी मार्गदर्शन करता है। इस प्रकार प्राचीन या आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षकों की भूमिका किसी भी राष्ट्र के लिए हमेशा अहम होती है। इस शोध अध्ययन का उद्देश्य प्राचीन भारतीय उच्च शिक्षा पद्धति में नालंदा महाविहार के परिप्रेक्ष्य में शिक्षकों की प्रासंगिकता का अध्ययन करना है। इस संदर्भ में हमें सर्वप्रथम नालंदा महाविहार के इतिहास को जानना एवं समझना होगा। नालंदा महाविहार राजगीर से 7 मील उत्तर वर्तमान बड़गांव के सन्निकट है। प्राचीन नालंदा महाविहार के भग्नावशेष आज भी अपने अतीत के गौरव को प्रस्तुत करते है। साथ ही इस विश्वविद्यालय के भग्नावशेष से यह सहज ही पता चलता है कि कैसे एक छोटा–सा गांव विश्वविख्यात विश्वविद्यालय का बन गया था। शिक्षण संस्थान के रूप में नालंदा महाविहार की स्थापना तीसरी शताब्दी के बाद हुई। चौथी शताब्दी तक इसकी ख्याति दूर–दूर तक फैल चुकी थी। सुदूर दक्षिण से नागार्जुन तथा उनके शिष्य आर्यदेव क्रमशः 300 तथा 330 ई. के लगभग यहाँ अध्ययन–अध्यापन के निमित्त आये थे **(तोमर, 2022)**। प्राचीन नालंदा महाविहार के खण्डहरों की खुदाई से यह पता चलता है कि नालंदा महाविहार के भवन और विश्रामागार एक मील लम्बे तथा आधा मील चौड़े एक समतल भूखंड पर अवस्थित थे। इन खण्डहरों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि इनमें व्याख्यान कक्ष, छात्रावास एवं संघाराम जिन्हें मठ भी कहा जाता था आदि सभी एक पूर्व–निश्चित योजना के अनुसार पंक्तियों में निर्मित थे। छात्रावासों में कक्ष का प्रबंध विद्यार्थियों की श्रेणी के अनुसार होता था। उच्च श्रेणी के विद्यार्थियों को अधिक सुविधाएं प्रदान की जाती थी। प्रत्येक छात्रावास में सामूहिक व्यवस्था थी। यह सभी व्यवस्थाएं (भोजन, वस्त्र, औषधि) विद्यार्थियों के लिए निरूशुल्क थी। इस संस्थान के भवन का निर्माण शिक्षण–अधिगम अवस्थितियों के अनुरूप की गई थी। केंद्र में व्याख्यान कक्ष में सात बड़े–बड़े कक्ष थे। यह भवन सुन्दर और भव्य रूपी हैं **(अल्टेकर, 2014)**।

हुएन–त्सांग के जीवन–चरित्र के लेखक श्रमण ली **(तोमर, 2022)** के अनुसार विश्वविद्यालय में सदैव दस हजार 'आवासिक और नवागन्तुक' रहते थे जिनमें आचार्य तथा अतिथि भी सम्मिलित थे। नालंदा महाविहार का स्वरूप एक उच्च शिक्षा के मुख्य केंद्र के रूप में रहा है। वैश्विक स्तर पर उच्च शिक्षा संस्थान से

प्रतिभाशाली व्यक्ति नालंदा महाविहार में अपने ज्ञान और विस्तार करने आते थे। नालंदा महाविहार के प्रसिद्ध आचार्यों में शीलभद्र, धर्मपाल, चंद्रपाल, गुणमति एवं स्थिरमति आदि प्रमुख थे। इन आचार्यों ने ही अपने ज्ञान प्रभा से विभिन्न शिक्षार्थियों की शंकाओं को मिटा कर उनका पथ प्रदर्शित किया करते थे। हुएन–त्सांग **(तोमर, 2022)** के अनुसार "नालंदा के आचार्यों की संख्या– 1510 थी।" शिक्षकों की योग्यताओं के अनुसार इनकी तीन श्रेणीयाँ थी जिसमें प्रथम श्रेणी में उच्चतम श्रेणी के 10 शिक्षक ऐसे थे जो कि सूत्र तथा शास्त्र ग्रंथों के पचास संग्रहों की व्याख्या कर सकते थे। हुएन–त्सांग ऐसे दस शिक्षकों में से एक था । द्वितीय श्रेणी में ऐसे शिक्षक थे जो 30 संग्रहों की व्याख्या कर सकते थे। तृतीय श्रेणी में ऐसे शिक्षक थे जो कि सूत्रों तथा शास्त्रों के केवल 20 संग्रहों की ही व्याख्या कर सकते थे। नालंदा महाविहार के प्रधान आचार्य शीलभद्र थे जिन्होंने सूत्रों तथा शास्त्रों के समस्त संग्रहों का पूर्ण अध्ययन किया था तथा वे इन ग्रंथों की व्याख्या भी कर सकते थे। इस प्रकार नालंदा महाविहार की शैक्षणिक प्रक्रिया को बखूबी समझा जा सकता है।

संबंधित साहित्य की समीक्षा :

कुमार (2022) ने प्राचीन भारतीय शिक्षा में तक्षशिला एवं नालंदा विश्वविद्यालयों का योगदान : एक ऐतिहासिक अध्ययन पर शोध किया। इन्होंने अपने शोध निष्कर्ष में पाया कि तक्षशिला एवं नालंदा महाविहार की शिक्षण–अधिगम शैली इस प्रकार थी कि चरक, भरद्वाज, कपिल, कणाद, पतंजलि, नागार्जुन, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्य एवं जीवक आदि विद्वान दर्शनिक, चिकित्सक, राजनीतिक, साहित्यकार जैसे क्षेत्रों में अपनी ख्याति प्राप्त की थी। प्राचीन काल में भारत को वैश्विक स्तर पर बौद्धिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में जो गौरव प्राप्त था उसका श्रेय नालंदा एवं तक्षशिला विश्वविद्यालय को जाता है। यह सब वहाँ की विशिष्ट शिक्षण शैली कारण था। इसलिए हमें इन्हीं विश्वविद्यालयों के समान अपने वर्तमान विश्वविद्यालयों में शिक्षण स्तर को बनाना चाहिए।

मिश्रा (2021) ने तक्षशिला एवं नालंदा महाविहार की शिक्षा–व्यवस्था का तुलनात्मक अध्ययन एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उसकी प्रासंगिकता पर शोध अध्ययन किया। इन्होंने अपने शोध अध्ययन में यह स्पष्ट किया कि प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली के उद्देश्यों को वर्तमान शिक्षा प्रणाली में स्वीकार करके और इस शिक्षण व्यवस्था से समन्वय स्थापित करना आधुनिक शिक्षा प्रणाली की मांग है। प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति की आगमन–निगमन प्रणाली का महत्व स्वतः प्रमाणित है। श्रम शिक्षण विधि प्राचीन भारत की अमूल्य धरोहर है। इस प्रकार नालंदा और तक्षशिला प्राचीन भारत की प्रतिनिधि शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा प्रणाली की समस्त

मूल–भूत विशेषताएं विद्यमान थी जिनमें से अनेक परम्पराएं और पद्धतियां नवीन भारतीय शिक्षा प्रणाली के लिए आज भी महत्वपूर्ण है।

सिन्हा (2019) ने प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति की वर्तमान समय में प्रासंगिकता लिखे आलेख के निष्कर्ष में बताया कि वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली तत्कालीन समय में संसार की श्रेष्ठतम शिक्षा प्रणाली थी। परंतु आज के भारतीय समाज के स्वरूप और उसकी भावी आवश्यकताओं की दृष्टि से वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली के कुछ तत्व ग्रहणीय हैं और कुछ त्याज्य भी हैं। वैदिक शिक्षा पद्धति के प्रमुख ग्रहणीय तत्व हैं– निःशुल्क शिक्षा, व्यापक उद्देश्य, व्यापक पाठ्यचर्या, गुरु शिष्यों का अनुशासित जीवन, गुरु–शिष्यों के मधुर संबंध और शिक्षण संस्थाओं की संस्कार प्रधान पद्धति। त्याज्य गुणों में शिक्षा की व्यवस्था में राज्य का उत्तर दायित्व न हो, आय के अनिश्चित स्रोत, भिक्षाटन, रटने पर अधिक बल एवं कठोर अनुशासन। इस प्रकार प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली के प्रमुख ग्रहणीय तत्वों को अपना कर तत्कालीन शिक्षा प्रणाली में सुधार एवं गुणवत्ता पर विचार किया जाना चाहिए।

कुमार एवं पंडा (2019) ने प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति की वर्तमान समय में नैमित्तिकता पर किये गए शोध में पाया कि प्राचीन काल के विद्यार्थियों के पास चाहे आजकल के स्कूली लड़के–लड़कियों की तरह पुस्तकों और कॉपियों के ढेर नहीं लगे रहते थे और न उनमें से प्रत्येक को भूगोल और इतिहास से लेकर विज्ञान के आविष्कारों तक की पाठ्य पुस्तकें पढ़नी पड़ती थी। पर उस समय जो कुछ सिखाया जाता था वह जीवन भर के लिए उपयोगी होता था। इस प्रकार विद्यार्थी को ऐसा दक्ष बना दिया जाता था कि वह समाज में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता था।

यादव (2018) ने नालंदा महाविहार के शैक्षणिक योगदानों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि धर्मपाल और चन्द्रपाल ने तथागत की शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को सुवासित कर दिया था। गुणमति और स्थिरमति जिनका पांडित्य और कीर्ति सर्वज्ञात थे, प्रमामित्र जिन्होंने शास्त्रार्थ में अपने सुस्पष्ट तर्कों की धाक जमा राखी थी। जिनचंद्र आचार्य जिनका आचरण आदर्शभूत तथा बुद्धि प्रखर थी तथा शीलभद्र जिनकी सर्वगुण सम्पन्नता व स्वतंत्र प्रज्ञा विनय के कारण प्रकट नहीं होती थी– ये सर्व आदर्शचारिणी विद्वान नालंदा की कीर्ति बना रहे थे। ये विद्वान अध्ययन–अध्यापन से ही संतुष्ट नहीं थे अपितु इन्होंने अनेक बहुमूल्य ग्रंथों की रचना भी की थी। इन ग्रंथों का प्रचार–प्रसार प्राचीन काल से ही हो रहा है।

शोध अध्ययन का औचित्य :

जब हम शिक्षक विशेषताओं की चर्चा करते हैं तो हमारे मन–मस्तिष्क में एक ऐसे शिक्षक छवि उभरती है जो विषय विशेषज्ञ, सृजनकर्त्ता एवं विद्यार्थियों की अंतर्निहित शक्तियों का विकास आदि का विशेषताओं को ग्रहण करने वाला हो। अतः शिक्षक अपने इन शैक्षिक दायित्वों को आनंदमय रूप से निभाता है तो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में अपना सक्रिय सहयोग कर रहा होता है। विद्यार्थियों के भविष्य को आकार देने के कार्य भी शिक्षक का होता है। शिक्षक के महत्वपूर्ण दायित्व के कारण उसे समाज में सबसे ज्यादा सम्मानित व्यक्ति के रूप में देखा जाता है। समाज में शिक्षक का ऐसा दायित्व है कि वह हर काल में चर्चा का विषय बना रहता है। इसलिए शिक्षक की महत्ता को समझना अति आवश्यक हो जाता है। शिक्षकों के विषय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति– 2020 में संस्तुति की गई है कि शिक्षकों के लिए उच्चतर दर्जा और उनके प्रति आदर और सम्मान के भाव को पुनर्जीवित करना होगा। इस प्रकार शिक्षकों की प्रासंगिकता का अध्ययन करना महत्वपूर्ण हो जाता है।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. प्राचीन भारतीय शिक्षा के प्रमुख केंद्र के रूप में नालंदा महाविहार की पृष्ठभूमि को समझना।
2. नालंदा महाविहार के शिक्षकों की विशेषताओं का अध्ययन करना।

अध्ययन की सामग्री एवं क्रियाविधि :

प्रस्तुत अध्ययन हेतु द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है जिनमें पुस्तक एवं पत्र–पत्रिकाओं के द्वारा तथ्यों का संकलन किया गया है।

तथ्यों का विश्लेषण

शिक्षण विधि में व्याख्यान कौशल की प्रमुखता :

प्राचीन काल से ही शिक्षण–अधिगम में व्याख्यान शैली का उपयोग मुख्य रूप से निरंतर किया जाता रहा है। नालंदा महाविहार के भवन का निर्माण इस प्रकार से किया गया था कि एक शिक्षक उचित स्थान पर बैठ कर अपना व्याख्यान दे सके। नालंदा महाविहार में प्रतिदिन विभिन्न विषयों से संबंधित लगभग 100 व्याख्यान दिये जाते थे। यह व्याख्यान विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य होते थे। विद्यार्थी भी इन व्याख्यानों में रुचिमय होकर उपस्थित रहते थे। नालंदा महाविहार में विशेष व्याख्यान की भी व्यवस्था की जाती थी। इसके साथ–साथ इन व्याख्यानों में विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं एवं शंकाओं का समाधान विशेष रूप से किया

ISSN: 2347-2979

जाता था। इस प्रकार यह विभिन्न विशेषता आधुनिक उच्च शिक्षा व्यवस्था की नींव के रूप में कार्य करती हैं।

शास्त्रार्थ का प्रबंधन :

नालंदा महाविहार की यह तीसरी शिक्षण–अधिगम पद्धति थी। यह पद्धति सक्रिय अधिगम के स्वरूप को प्रदर्शित करती है। इस पद्धति के द्वारा विश्वविद्यालय के सभी हितधारक सक्रिय रूप से भागीदारी करते हैं। हुएन–त्सांग के अनुसार "गंभीर प्रश्नों के पूछने और उत्तर देने के लिए दिन का समय पर्याप्त नहीं होता था तो प्रातरू काल से लेकर रात तक वे शास्त्रार्थ में निरंतर लगे रहते थे" **(तोमर, 2022)**। आधुनिक काल की शिक्षा प्रणाली में यह प्रक्रिया वाद–विवाद, परिचर्चा एवं संगोष्ठी जैसी गतिविधियों के माध्यम से पूर्ण किया जाता है।

समावेशिता द्वारा शैक्षणिक व्यवस्था :

नालंदा महाविहार के समस्त कार्य शिक्षकों तथा विद्यार्थियों के सहयोग से संचालित किया जाता था। शिक्षक और शिक्षार्थी का पारस्परिक व्यवहार इतना स्निग्ध था कि विश्वविद्यालय के 700 वर्ष के इतिहास में एक भी दृष्टांत ऐसा नहीं मिलता जिसमें विद्यार्थियों की ओर से शिक्षकों के प्रति किसी प्रकार की अवज्ञा अथवा अवहेलना हुई हो **(मुखर्जी, 1947)**। यह समावेशिता आधुनिक काल में विश्वविद्यालय के सभी हितधारकों के सहयोग से विश्वविद्यालय की कार्य प्रणाली को संचालित किया जाता है। जिसमें विश्वविद्यालय विभिन्न समितियों के समावेशन के स्वरूप को देखा जा सकता है। यह विभिन्न समितियां ही विश्वविद्यालय के निरंतर विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

बहुविषयक शिक्षा की व्यवस्था :

नालंदा महाविहार में न केवल ब्राह्मण एवं बौद्ध धर्म ग्रंथों का अध्यापन होता था अपितु सभी प्रमुख विषयों के अध्यापन के लिए शिक्षक की व्यवस्था थी। जिसमें शब्द विद्या, चिकित्सा विद्या, तंत्र विद्या एवं योग विद्या आदि जैसे विषय उपलब्ध थे **(सिंह, 2018)**। आचार्य शीलभद्र योगशास्त्र के श्रेष्ठतम शिक्षक रूप में थे। नालंदा महाविहार ने बहुविषयक होने के कारण ही ख्याति प्राप्त की थी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में समग्र और बहु–विषयक शिक्षा की ओर का विषय रखा है। भारत में समग्र एवं बहु–विषयक तरीके से सीखने की एक प्राचीन परंपरा है नालंदा महाविहार से लेकर ऐसे कई व्यापक साहित्य हैं जो विभिन्न क्षेत्रों में विषयों के संयोजन को प्रकट करते हैं। इन बहु– विषयकों में साहित्य, विज्ञान, रसायनशास्त्र, गणित, व्यवसायिक एवं

ISSN: 2347-2979

व्यवहारिक कौशल शामिल हैं। इस बहु–विषयक शिक्षा व्यवस्था के द्वारा ही विद्यार्थी की क्षमताओं, बौद्धिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, शारीरिक, भावात्मक एवं नैतिकता का एकीकृत तरीके विकास होगा। इस प्रकार विद्यार्थियों के कौशल विकास के लिए विश्वविद्यालयों का बहुविषयक होना अति आवश्यक हो जाता है।

श्रम शिक्षण विधि :

वर्तमान समय में विद्यालयी शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालययी शिक्षा तक के विद्यार्थियों में श्रम के प्रति श्रद्धा का भाव नहीं है। इस श्रम शिक्षण विधि को केंद्र में रखकर समसमायिक समय में प्रोजेक्ट विधि का विकास हुआ लेकिन श्रम के उद्देश्यों पर पूर्णतरू सफल नहीं हो पाई। दिन–प्रतिदिन श्रम शिक्षण चर्चा का विषय बनता जा रहा है। श्रम शिक्षण विधि प्राचीन भारत की अमूल्य धरोहर है **(मिश्रा 2021)**। इस आधुनिक व्यस्त जीवन शैली में मानव भौतिक संसधानों पर निर्भर होता जा रहा है। प्राचीन गुरुकुल शिक्षा में विद्यार्थी श्रम संबंधित क्रियाओं पर विशेष ध्यान दिया जाता था। इस प्रकार प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली के शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थी के लिए श्रम शिक्षण विधि का प्रावधान भी किया जाता था। गुरुकुल की इस श्रम शिक्षण विधि को आधुनिक शिक्षा के साथ संयोजित करना होगा जिससे कि सम्पूर्ण राष्ट्र में श्रम के प्रति श्रद्धा का वातावरण निर्मित हो सके **(सिंह, 2006)**।

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का लक्ष्य :

भारतीय संस्कृति अनुशासन एवं नैतिक मूल्यों जैसे गुणों को महत्व देती है। शिक्षक का कार्य सिर्फ शिक्षा के क्षेत्र तक ही सीमित नहीं होता है। जीवन की जटिलताओं, अवसरों एवं अभिप्रेरित करने में मार्गदर्शन भी करना होता है। शिक्षक अपने अनुभव और ज्ञान के माध्यम से अपने विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जिसमें विद्यार्थियों की सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक आचरण एवं धैर्य जैसी विशेषताओं का संरक्षण एवं विकास किया जाता था। इस प्रकार प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली विशेषकर नालंदा महाविहार में प्रदान की जाने वाली शिक्षा को वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सम्मिलित किया जाना श्रेयस्कर होगा।

निष्कर्ष :

नालंदा महाविहार की इन विशेषताओं से यह ज्ञात होता है कि नालंदा महाविहार के शैक्षिक प्रणाली का उपयुक्त योजना और उसका संचालन व्यवस्थित ढंग से किया जाता था । नालंदा महाविहार की शैक्षिक–सांगठनिक अवस्थिति इतनी मजबूत थी कि इसके कारण इस महाविहार की ख्याति अंतरराष्ट्रीय

ISSN: 2347-2979

स्तर तक थी। इसलिए नालंदा महाविहार ने अंतरराष्ट्रीय शिक्षा के केंद्र के रूप में अपनी पहचान बनाई। नालंदा महाविहार के बहु–विषयक शैक्षिक प्रणाली द्वारा विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास किया जाता था। इसी शिक्षण पद्धति को अपना कर जीवंत शिक्षा एवं नवीन अनुसंधान की गुणवत्ता को बढ़ाया जा सकता है। ऐसी ही अनुशंसा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में की गई है। इसमें संस्थागत पुनर्गठन और समेकन एवं समग्र और बहु–विषयक शिक्षा की ओर नामक शीर्षक द्वारा चर्चा की गई है। इसके साथ–साथ अनुशंसा में भारत को बहुमुखी प्रतिभा वाले योग्य और अभिनव व्यक्तियों को बनाने के लिए इस परम्परा को वापस लाने की आवश्यकता का भी विषय रखा है। इस प्रकार उपर्युक्त विवरणों के द्वारा प्राचीन उच्च शिक्षा के केंद्र के रूप में नालंदा महाविहार की शैक्षिक सांगठनिक व्यवस्था की प्रासंगिकता को समझा जा सकता है।

संदर्भ सूची :

- कुमार, एस. (2022). प्राचीन भारतीय शिक्षा में तक्षशिला एवं नालंदा विश्वविद्यालयों का योगदान : एक ऐतिहासिक अध्ययन. शोध गंगा. https://shodhganga.inflibnet.ac.in:8443/jspui/handle /10603/476713
- कुमार, ए. और पंडा, बी. के. (2019). प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति की वर्तमान समय में नैमित्तिकता. *Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*. 6 (11) 12059-12065 https://oaji.net/articles/2019/1174-1559734534.pdf
- अल्टेकर, ए. एस. (2014). एजुकेशन इन अन्सिएंट इंडिया. ईशा बुक.
- तोमर, एल. आर. (2022). प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति. राधा पब्लिकेशन्स.
- मिश्रा, एस. (2021). तक्षशिला एवं नालंदा विश्वविद्यालय की शिक्षा–व्यवस्था का तुलनात्मक अध्ययन एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उसकी प्रासंगिकता. शोध गंगा. https://shodhganga.inflibnet.ac.in:8443/jspui/handle/10603/349819
- मूकेर्जी, आर. के. (1947). अन्सिएंट इंडिया एजुकेशन. मक्मिल्लन एंड कंपनी लिमिटेड
- यादव, एस. के. (2018). नालंदा विश्वविद्यालय के शैक्षणिक योगदानों का विश्लेषणात्मक अध्ययन. *Journal of Emerging Technologies and Innovative Research.* 5 (6) 622-624 https://www.jetir.org/papers/JETIR1806891.pdf

- सिन्हा, एस. के. (2019). प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति की वर्तमान समय में प्रासंगिकता. आर्यावर्त शोध विकास पत्रिका. 11(14) 186–188 https://www.aryavartsvs.org.in/uploaded_book/61.%20Samit%20Kumar%20Sinha,%20Ballia%20(U.P.).pdf
- सिंह, एस. (2006). प्राचीन भारत में शिक्षा व्यवस्था. राधा पब्लिकेशन्स.
- सिंह, ए. के. (2018). प्राचीन भारतीय शिक्षा के केंद्र के रूप में नालंदा का महत्व. श्रृंखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका. 5(8) 69–7 http://www.socialresearchfoundation.com/upoadresercpapers/3/206/1806150525521st%20ashutosh%20singh.pdf
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, 2020, पृष्ठ 30 https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pdf